



SHRI YAZDI NAOSHIRWAN KARANJIA

Shri Yazdi Naoshirwan Karanjia is a Genre of Parsee Theatre. He holds a prominent place in the world live theatre and continues to contribute its unique style of Comic Farce and brand of humour that entertains theatregoers with laughter. He is a wizard dramatist and also a champion in the area of community initiative and academic accountancy training.

2. Born on 3rd March, 1937, Shri Karanjia started performing on stage as a child actor. He nurtured his acting skills through college years, and won a National Award in New Delhi representing Gujarat University in 1958. Acting eventually became his passion and he gave birth to the Yazdi Karanjia Group founded in 1959. He is the central pillar wearing multiple hats as producer, director, and last but not the least an actor.

3. Besides passion, dedication, love for the arts, and a zeal to make people laugh through boisterously hilarious comedies, what separates Shri Karanjia from the rest of the actors was the selfless philanthropic motivation. All his proceeds of Shri Karanjia always go to Charitable causes. He became a sought after performer invited across India's Cities, towns and villages and also in London, USA, Canada, Singapore and Pakistan, resulting in charitable contributions of crores of Rupees towards social, religious, educational and medical causes.

4. As a Writer and Director, Shri Karanjia is infectiously enthusiastic but he simply shines as an actor. He has a reputation of being a brilliant funny man with his instinctively impeccable comic timing appreciated and taken note of by veteran actors like Raj Kapoor, Sanjeev Kumar, Paresh Rawal and Boman Irani who specially came to see him act. Whether he plays the lead as 'Bicharo Burjor' or 'Rangilo Behram', or a supporting character, audiences can count of his snappy pacing, quick witted comic sense, and most importantly his command of delivering the punch lines. Often, he does not depend on words and just his gestures and meaningful glances result in pure comedy and laughter for the audience. His command of physical comedy, with his madcap running around, banging into things and people, and his pratfalls even at his ripe age of 83 year, has the characteristics of comic geniuses like Charlie Chaplin, Buster Keaton or Jerry Lewis. His talent is evident in his more than 300 record-breaking performances in several of his popular plays.

5. Besides his passion for acting, Shri Karanjia is a Master of Accountancy. He represented India and presented a paper on Accountancy in 1990 at World Accountancy Conference in London. He is a teacher par excellence teaching Accounts and Shorthand at the famous Cambay Institute of Commerce, wherein he rose to become Chief Conductor at the SSC Board exam. He also served as a member of Text Books and Syllabus Committee of Gujarat Government. He also served on Film Censor Board, Gujarat State from 1995 to 1997. He is the Member of Drama Scrutiny Board of Gujarat, Conciliator in Permanent Lok Adalat, Trustee of Surat Parsee Panchayat and Lions Cancer Detection Centre Trust and serves in many such organisations.

6. Shri Karanjia has been rewarded with numerous honours and awards, from community groups and organizations at local, regional, state and national levels. He is the darling of the people and his fan following is so great as an actor that the whole city of Surat celebrated his 60th and 75th Birthday as a city celebration. The Government of Gujarat produced a 50 minutes documentary on his life sketch and has exalted him multiple times including Gujarat Gaurav Award and Samman Patra at the hands of Honorable PM Shree Narendra Modi, the then Chief Minister of Gujarat. National recognition was bestowed with Legend of Indian Theatre Award by All India Artists Association and Lifetime Achievement Natraj Award by revered Shree Morari Bapu. The Surat Academic Association conferred on him Bhisma Pitamah of Education World.





श्री यझदी नौशीरवान करंजीया

श्री यझदी नौशीरवान करंजीया पारसी रंगमंच की प्रख्यात हस्ती हैं। वह विश्व रंगमंच की दुनिया का एक जाना–माना नाम हैं और हास्य व्यंग्य की अपनी अनूठी शैली के द्वारा नाट्य प्रेमियों का मनोरंजन कर रहे हैं। वह एक प्रतिभाशाली नाट्यकार हैं और उन्हें सामुदायिक पहल और अकादमिक लेखांकन प्रशिक्षण के लिए भी जाना जाता है।

2. दिनांक 3 मार्च,1937 को जन्मे, श्री करंजीया ने बाल कलाकार के रूप में रंगमंच अभिनय शुरू किया। उन्होंने कॉलेज के दिनों में अपनी अभिनय कला को निखारा और 1958 में गुजरात विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व करते हुए नई दिल्ली में राष्ट्रीय पुरस्कार जीता। अभिनय उनका जुनून बन गया और उन्होंने 1959 में यझदी करंजीया ग्रुप की शुरुआत की। वह इस ग्रुप में न केवल निर्माता, निर्देशक बल्कि अभिनेता के तौर पर भी प्रमुख भूमिकाएं निभाते हैं।

3. कला के प्रति जज्बा, समर्पण और कॉमेडी के जरिए लोगों को हँसाने के अलावा, श्री करंजीया का एक और गुण है जो उन्हें बाकी अभिनेताओं से अलग करता है, वह है उनका निःस्वार्थ लोकोपकारी कार्य। उनकी पूरी आय धर्मार्थ कार्यों में लग जाती है। वह लोकप्रिय नाटककार हैं जिन्हें भारतीय शहरों, नगरों और गांवों तथा लंदन, अमेरिका, कनाडा, सिंगापुर और पाकिस्तान में भी अपनी कला के प्रदर्शन के लिए बुलाया जाता है। इन प्रदर्शनों से सामाजिक, धार्मिक, शैक्षिक और चिकित्सा संबंधी सामाजिक हित के कार्यों के लिए करोड़ों रुपये प्राप्त होते हैं।

4. लेखक और निर्देशक के रूप में, श्री करंजीया हमेशा उत्साह से भरे रहते हैं और उनका बेहतरीन काम अभिनेता के रूप में दिखाई देता है। वह एक शानदार हास्य कलाकार हैं, जिनकी परिपूर्ण हाजिरजवाबी की प्रशंसा राज कपूर, संजीव कुमार, परेश रावल और बोमन ईरानी जैसे अनुभवी कलाकारों ने भी की है जो खास तौर से उनका अभिनय देखने के लिए आया करते थे। चाहे 'बिचारो बरजोर' अथवा 'रंगीलो बेहराम', के रूप में मुख्य किरदार हो या सहायक अभिनेता की भूमिकाएं हों, दर्शकों को उनका स्वतः स्फूर्त, कौतुकपूर्ण भाव और सबसे बढ़कर उनके हँसी भरे जुमले गुदगुदा देते हैं। वह शब्दों से ही नहीं बल्कि अपने हाव–भाव और अर्थपूर्ण भंगिमाओं से भी दर्शकों को हँसा देते हैं। शारीरिक हरकतों पर उनका नियंत्रण, उनकी चपलता, चीजों और लोगों से टकराना और 83 वर्ष की वृद्धावस्था में भी अचानक पीठ के बल गिर पड़ना चार्ली चैप्लिन, बस्टर कीटोन और जैरी लेविस जैसे महान हास्य कलाकारों की याद दिलाता है। कई लोकप्रिय नाटकों में 300 से अधिक बार रिकॉर्ड तोड़ अभिनय से उनकी प्रतिभा भली–भांति अभिव्यक्त होती है।

5. अभिनय के प्रति गहरी दिलचस्पी के अलावा, श्री करंजीया लेखांकन में स्नातकोत्तर डिग्रीधारी हैं। उन्होंने 1990 में, लंदन में वर्ल्ड एकाउंटेंसी कॉन्फ्रेंस में भारत का प्रतिनिधित्व किया और लेखांकन पर एक पेपर भी प्रस्तुत किया। वह एक उत्कृष्ट शिक्षक भी हैं और प्रसिद्ध कैम्बे इंस्टिट्यूट ऑफ कॉमर्स में लेखांकन और आशुलिपि भी पढ़ाते हैं। बाद में वह इस इंस्टिट्यूट के एसएससी बोर्ड परीक्षा के मुख्य संचालक बने। उन्होंने गुजरात सरकार की पाठ्य पुस्तक और पाठ्यक्रम समिति के सदस्य के रूप में भी कार्य किया है। वह 1995 से 1997 तक फिल्म सेंसर बोर्ड, गुजरात राज्य के सदस्य भी रहे हैं। वह गुजरात के ड्रामा स्क्रूटनी बोर्ड के सदस्य, स्थायी लोक अदालत में मध्यस्थ, सूरत पारसी पंचायत तथा लायंस कैंसर डिटेक्शन सेंटर ट्रस्ट के न्यासी हैं और ऐसे कई अन्य संगठनों में जुड़े हुए हैं।

6. श्री करंजीया को सामुदायिक समूहों तथा स्थानीय, क्षेत्रीय, राज्य स्तरीय और राष्ट्रीय संगठनों से कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। एक अभिनेता के रूप में लोग उन्हें बहुत प्यार करते हैं। उनकी फैन फॉलोइंग इतनी बड़ी है कि पूरे सूरत शहर ने उनके 60वें और 75वें जन्म दिन को नगर समारोह के रूप में मनाया। गुजरात सरकार ने उनके जीवन और कार्यों पर 50 मिनट का एक वृत्तचित्र बनाया है और उन्हें अनेक बार सम्मानित किया है जिनमें माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी, गुजरात के तत्कालीन मुख्यमंत्री द्वारा गुजरात गौरव पुरस्कार और सम्मान पात्र प्रदान करना शामिल हैं। उन्हें ऑल इंडिया आर्टिस्ट्स एसोसिएशन द्वारा लीजेंड ऑफ इंडियन थियेटर अवार्ड के रूप में राष्ट्रीय सम्मान तथा पूज्य श्री मुरारी बापू द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट नटराज अवार्ड प्रदान किया गया था। सूरत अकादमिक एसोसिएशन ने उन्हें भीष्म पितामह ऑफ एजुकेशन वर्ल्ड से सम्मानित किया।